चंद्राकार पर्वतों की नगरी चंदेरी

चंद्राकार पर्वतों की गोद में विन्ध्य पर्वत श्रृंखला में आबाद मालवा का प्रवेश द्वार चंदेरी को अपनी शानदार विरासत के लिए यहां की कला एवं हस्तशिल्प को यूनेस्को की विश्व धरोहर की क्रियेटिव सिटी की सूची में नामित किया गया है। ऐतिहासिक महत्व के लिए प्रसिद्ध चंदेरी पर प्रकृति ने खूब मेहरबानी की है। प्रकृति की अनमोल धरोहरों वनों और झरनों की खुशबू से लेकर कला और पुरासंपदा, ऐतिहासिक किले चंदेरी को खास बनाते हैं। चेदि राज्य की अतीत में राजधानी रही वर्तमान चंदेरी प्रतिहार वंश के प्रतापी राजा कीर्तिपाल की ऋणी है, जिनके शासनकाल में बूढ़ी चंदेरी के स्थान पर नई चंदेरी को दशमी/ग्यारहवीं शताब्दी में बसाया गया था। महाभारत काल से काल के थपेड़े सहता रहा यह नगर अभी भी रहस्य ही है। कवि कालिदास ने मेघदूत के विदिशा जाने वाले मार्ग पर प्राचीन नगरी के संदर्भ में भले ही स्पष्ट संकेत नहीं दिए, पर इतिहास बताता है कि गुप्तवंश, प्रतिहारवंश, मुस्लिम आक्रांताओं, बुंदेला राजपूतों एवं सिंधियाओं ने यहां पर शासन किया।

सुरेंद्र अग्निहोत्री
लखनऊ

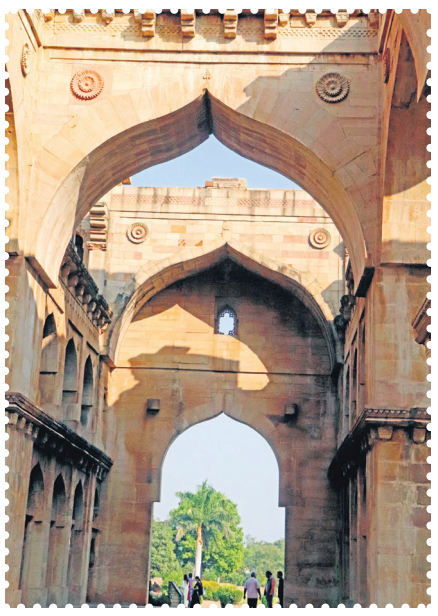

वर्तमान चंदेरी नगरी को प्रतिहारवंश महाराज कीर्तिपाल कुरुमदेव ने दसवीं और ग्यारहवीं शताब्दी के बीच बसाया था। नगरी का विस्तार 30 मील तक का था। मुगलकाल में इसकी जनसंख्या 1 लाख 75 हजार बताई गई है, जिसके प्रत्यक्ष प्रमाण आज भी उत्तर-पश्चिम में बूढ़ी चंदेरी, हंसारी, दक्षिण पूर्व में बेंहटी, बारी, तपाई, पंचमनगर, दक्षिण-पश्चिम में थूवोनजी, सीतामढ़ी, ख्यावदा, बीठला, भियांदात आदि हैं। इस समूचे क्षेत्र में पुरातत्व महत्व की विपुल सामग्री यत्र-तत्र बिखरी हुई है। राजवंशों के कार्यकाल में अनेकों उत्कृष्ट श्रेणी के निर्माण कार्य हुए हैं, जो स्थापत्य कला के अनूठे प्रमाण हैं। शिलालेखों से पता चला है कि यहां स्थापत्य कला गुप्तकाल की है। चंदेरी नगरी के अनेक नयनाभिराम मंदिर, मस्जिद, मठ, सराय, मकबरे, बावड़ियां, महल एवं किला आदि उल्लेखनीय हैं। चंदेरी नगरी 7 परकोटों के बीच बसी हुई थी, जिनमें अनेक प्रवेश द्वार थे। मुख्य दरवाजों के नाम यथा- दिल्ली दरवाजा, ढोलिया दरवाजा, खिड़की दरवाजा, पखन दरवाजा, पिछारे दरवाजा, रेतबाग का दरवाजा, बिना नींव का दरवाजा, बादल महल का दरवाजा, जौहरी दरवाजा एवं कटी घाटी दरवाजा के नाम से आज भी प्रचलित हैं।

वीर भूमि बुंदेलखंड की स्थापत्य कला का बेजोड़ स्थल 'कीर्ति दुर्ग' इतिहास के उस कालखंड का चंदेरी मुस्लिम आक्रांताओं के रक्तपात की शिकार बनी। चंदेरी राज्य का मुख्य प्रवेश द्वार खूनी दरवाजा कहलाता है। यह द्वार राजा मेदनीराय की वीरगति का साक्षी है। 28 जनवरी सन् 1528 को बाबर ने पहाड़ों को काटकर हमला किया था। यह स्थल कटी घाटी के नाम से प्रसिद्ध है। यह युद्ध के संदर्भ में बाबर द्वारा लिखित पुस्तक "तुजक-ए-बाबरी" के अनुसार दिसंबर, 1527 में बाबर ने चंदेरी में प्रवेश का मार्ग उत्तर दिशा से चुना और अपनी सेना का शिविर बत्तीसी बावड़ी पर स्थापित कर जनवरी, 1528 में युद्ध के नगाड़े बजा दिए। बाबर ने चंदेरी को चारों ओर से घेर लिया। राजपूतों ने दुर्ग बचाने के लिए भीषण प्रतिरोध किया, लेकिन विजय लुटेरे बाबर को मिली, तो हजारों क्षत्राणी वीरांगनाओं ने अपने सतीत्व की रक्षा के लिए विक्रम संवत् 1584, माघ सदी 8, बुधवार को किले में ही एक तालाब के किनारे जौहर किया। इस जौहर में मेदनीराय की पत्नी मणिमाला तथा उनकी सहेली ने भी अपने आपको शामिल किया। यह जौहर अपने आप में तत्कालीन राजाओं के चरित्र को इंगित करता है। इस स्थल पर एक स्तंभ बना है। इसके निर्माण में ग्वालियर राज्य ने सहयोग किया था। स्तंभ पर सुरुचिपूर्ण ढंग से जौहर के दृश्य के अतिरिक्त स्वर्ग में शिवपूजन का दृश्य अंकित है। समीप ही संगीत सम्राट 'बैजू बावरा' की समाधि एकांत में अपने अतीत की गाथा सुना रही है। इसी पहाड़ी पर किला कोठी है, जिसका संचालन लोक निर्माण विभाग के अधीन है। नौ खड़ा महल कभी चंदेरी राज्य का सबसे सुंदर महल था। आज खंड-खंड हो चुका है। स्मृति शेष पाषाण खंड अपने सुनहरे दिनों को ताजा किए है।

प्राचीन काल में चेदि राज्य पर राजा शिशुपाल का शासन था। इस राज्य के अवशेष मात्र ही शेष हैं। लोकश्रुति के अनुसार राजा शिशुपाल ने, जो भगवान कृष्ण से ईर्ष्या रखता था, अपने राज्य में प्रजा को मोर मुकुट के आकार युक्त जूते पहनवाए, जो यदाकदा ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी प्रचलित है। चंदेरी में वैसे तो अनेक तालाब हैं, लेकिन 'परमेश्वर तालाब' का विशेष महत्व है। इसके घाट पर बना लक्ष्मण मंदिर का प्रतिबिंब अपनी अनोखी आभा प्रस्तुत करता है।

दर्शनीय स्थल

- **चंदेरी का किला-** ग्यारहवीं शताब्दी में कीर्ति पाल द्वारा निर्मित चार मील से अधिक लंबी चंदेरी की दीवार, चंदेरी के इतिहास की मूक साक्षी है। परकोटे के अंदर बुंदेलखंड स्थापत्य के नौखड़ा महल और हवा महल दर्शनीय है।
- **जागेश्वरी देवी मंदिर :-** यह प्राचीन मंदिर पर्वत की एक खुली गुफा में स्थित है, इसकी मूर्ति स्वयंभू है। लोकश्रुति के अनुसार मां जागेश्वरी ने यहां के राजा को स्वप्न में कहा था कि मुझे नौ दिन नहीं देखा, तो मैं पूर्ण रूप में प्रकट हो सकती हूं। दर्शन की तीव्रता के कारण तीसरे दिन द्वार खोलने के कारण सिर्फ शीर्ष भाग ही मिला, जो मंदिर में स्थापित है। मंदिर के पास बना आकर्षित करता तालाब चंदेल कालीन कला का अनुपम उदाहरण है।
- **बूढ़ी चंदेरी :-** मौजूदा चंदेरी से 22 किमी की दूरी पर स्थित हैं। यहां 55 जैन मंदिरों के अवशेष मिलते हैं।
- **थूबोन जी :-** चंदेरी से 28 किमी की दूरी पर स्थित यहां दिगंबर जैन समाज के 16 जैन मंदिर हैं। निकट ही थूबोन नाम का एक ग्राम है, जहां भारतीय पुरातत्व विभाग का मूर्ति संग्रहालय तथा इसके आसपास दसवीं शताब्दी के अनेक जैन मंदिर उल्लेखनीय हैं।
- **बैंहटी मठ :-** चंदेरी से 18 किमी की दूरी पर दक्षिण-पूर्व दिशा में घने जंगलों के बीच स्थित यह मठ गुप्तकाल में तांत्रिकों की साधनास्थली रहा है। इसके 16 स्तंभों को पत्थर की बारीक कटाई से शेर, हाथी, मोर, घोड़े, हिरण, कमल के फूल एवं देवी देवताओं से सुसज्जित किया गया है।
- **देवी प्रतिमा-** चंदेरी से 12 किमी दूर वेदी की एक विलक्षण प्रतिमा है, जो अत्यंत प्राचीन एवं मनमोहक है।
- **खंदारगिरि-** यह स्थल चंदेरी से 2 किमी की दूरी पर दक्षिणांचल में स्थित। यहां पर सत्रहवीं शताब्दी से लेकर सोलहवीं शताब्दी तक की विशाल और भीमकाय शैल प्रतिमाएं बनी हुईं हैं।
- **दिल्ली दरवाजा :-** इस विशाल एवं कलात्मक द्वार का निर्माण दिलावर खां गौरी ने 1411 में निर्मित कराया था। इस महल के नीचे एक विशाल तालाब है, जहां हमेशा कमल के फूल खिले रहते हैं। यह तालाब बड़ा ही रमणीक लगता है। इसका निर्माण होशंगशाह गौरी ने 1433 ई. में कराया था।
- **कौशल महल :-** चंदेरी नगर से 4 किमी दूर फतेहाबाद गांव के पास मालवा के सुल्तान महमूद शाह प्रथम के द्वारा निर्मित 'कौशल महल' अपने अनूठी शैली के कारण मोहित करता है। चौकोर महल के चार प्रवेश द्वार हैं। यह विशाल महल वर्गाकार अफगान शैली में बना है तथा स्थापत्य कला का उकृष्ट नमूना है। इसका निर्माण महमूद खिलजी ने जौनपुर की जीत की खुशी में 1445 ई. में कराया था एवं इसका नाम कौशकेहफ्त मंजिल रखा था।
- **बत्तीस बावड़ी :-** चंदेरी से 2 किमी दूर उत्तर-पश्चिमी दिशा में तत्कालीन गर्वनर शेरखां ने सुल्तान गयासुद्दीन खिलजी के आदेशानुसार 1485 ई. में बत्तीस बावड़ी का निर्माण कराया था। इसमें पानी का स्तर हर घाट पर बराबर रहता है। यह बाबड़ी चंदेरी की 1200 बाड़ियों में विशेष स्थान रखती है।
- **जौहर स्मारक :-** चंदेरी के दक्षिण में चन्द्रगिरि पर्वत के ऊपर, किले के समीप जौहर स्मारक स्थित है। 1528 ई. में जब मुगल बादशाह बाबर ने महाराजा मेदनी राय को पराजित कर यह प्रसिद्ध दुर्ग छीना, तब 1500 राजपूत वीरांगनाओं में अपने सतीत्व की रक्षा के लिए जीवित ही अपने को अग्नि में समर्पित कर जौहर व्रत निभाया था। यह स्मारक इस घटना की याद दिलाता है।

ऐसे पहुंचें चंदेरी

वायु सेवा- ग्वालियर 259 किलोमीटर, भोपाल 258 किलोमीटर निकटवर्ती हवाई अड्डे हैं।

रेल सेवाएं- दिल्ली, मुंबई, चेन्नई मुख्य रेल मार्ग पर निकटवर्ती रेलवे स्टेशन ललितपुर (36 किमी), झांसी (124 किमी), मुंगावली (38 किमी) और अशोक नगर (46 किमी)।

सड़क मार्ग- शिवपुरी, ग्वालियर, अशोकनगर, गुना इंदौर, झांसी, ललितपुर, टीकमगढ़, विदिशा, सांची, भोपाल के लिए सीधी बस सेवा उपलब्ध है।

अनुकूल मौसम :- जुलाई से मार्च।

गलती से मिली सीख बनी सच्ची पहचान

आपबीती

वर्ष 1980 की बात है। पिता चंपावत जिले के सुदूर गांव तरकुली के प्राथमिक विद्यालय में शिक्षक थे। मैं तब कक्षा एक में था। शाम के समय पिताजी खाना बनाने की तैयारी करते और मैं पास ही बैठकर बीबीसी रेडियो पर समाचार लगाया करता। उन्होंने मुझे एक एटलस देकर कहा कि समाचार में जिस देश का नाम आए, उसे नक्शे पर खोजकर दिखाना है। यह रोजाना का क्रम था। एक दिन वेस्टइंडीज के क्रिकेट मैच की चर्चा चल रही थी। मैं नक्शे में उसे ढूंढने लगा, पर कहीं नहीं मिला, जब मैंने पिताजी को बताया कि यह देश नहीं मिल रहा, तो उन्होंने गुस्से में एक थप्पड़ लगा दिया। बाद में जब खुद उन्हें भी वेस्टइंडीज नहीं मिला, तो वे शर्मिंदा हुए। अगले दिन वे पास के जूनियर हाईस्कूल गए, जानकारी जुटाई और विद्यालय में सभी के साथ साझा की। तभी उन्होंने सिखाया कि गलती मानना और उससे सीखना ही सच्चे शिक्षक की पहचान है। वेस्टइंडीज कोई देश नहीं, बल्कि कैरेबियाई द्वीपों का समूह है, जो खेलों में एक इकाई के रूप में भाग लेते हैं। यह ज्ञान तो बाद में मिला, पर उस घटना ने मुझे सीख दी कि सच्ची शिक्षा वही है, जो जिज्ञासा को जीवित रखे और सत्य की खोज में ईमानदारी बरते।

एक और घटना मेरे बचपन की यादों में दर्ज है। जब मैं कक्षा तीन में था, पिताजी ने मुझे ब्लैकबोर्ड पर गणित का सवाल हल करने को कहा-एक भैंस का मूल्य सात सौ पच्चीस रुपये है। मैंने लिखा 70025 रुपये, उस समय समझ नहीं पाया कि सात सौ पच्चीस का अर्थ 725 होता है, न कि सत्तर हजार पच्चीस। गलती पर डांट और कुछ थप्पड़ भी पड़े, पर बाद में वही गलती मेरे जीवन की सबसे बड़ी सीख बनी। आज, जब मैं स्वयं गणित का प्राध्यापक हूं, तो समझ पाता हूं कि बच्चों को सिखाने का अर्थ सिर्फ सही उत्तर दिलाना नहीं, बल्कि उन्हें समझाने और दृश्य रूप में दिखाने का हुनर सिखाना है। शिक्षा संस्थानों में आज भी कई चुनौतियां हैं, लेकिन यदि हम ईमानदारी और लगन से अपना कार्य करते रहें, अपनी गलतियों से सीखते रहें और उस सीख को साझा करें तो यही सच्ची शिक्षा है।

डॉ. नरेंद्र सिंह सिजवाली
असिस्टेंट प्रोफेसर
एमबीपीजी कॉलेज, हल्द्वानी

लव बर्ड्स

लस्सी पर किया प्रपोज

मई 2018 की एक तपती दोपहर में वेटर ने तेजी से लस्सी के दो कुल्हड़ मेज पर रखें। उनमें से एक कुल्हड़ हल्का-सा डगमगाया, लेकिन एक नाजुक से हाथ ने उसे थामकर गिरने से बचा लिया। सामने बैठे लड़के को लगा कि जैसे डगमगाता हुआ कुल्हड़ और उसे थामने वाला हाथ उसका भविष्य हो।

इतने शॉर्ट नोटिस में, तपती धूप में भूखी-प्यासी कई ऑटो-टेपो बदलकर इस छोटे से रेस्तरां तक पहुंची लड़की वैसे तो भीतर ही भीतर झल्लाई हुई थी, पर फिर भी खुद को शांत रखते हुए धीमे से लस्सी का एक सिप लिया और पूछा- "हमें तो बच्चों के पास संडे को जाना था, आपने अचानक मुझे यहां क्यों बुला लिया?"

लड़के ने रेस्तरां के हल्के नीले कांच के बाहर कुछ यूं देखा जैसे शब्द तलाश रहा हो। फिर अपनी आंखों से काला चश्मा उतारकर मेज पर रखा और सीधे लड़की की आंखों में देखते हुए कहा- "मुझसे शादी कर लीजिए।" "क्या मतलब?" लड़की लस्सी और शब्दों को साथ में घोलती हुई बोली- "आप समझ रहे हैं कि क्या बोल रहे हैं?"

"हां! देखिए, आप मेरा अतीत और वर्तमान सब जानती हैं। मेरे घर वालों को भी आप पसंद हैं और कहीं न कहीं आपको तो शादी करनी ही है न, तो मुझसे ही कर लीजिए।" लड़का, लड़की के ऊपरी होंठ पर लगी लस्सी की सफेद मूंछ को देखते हुए एक सांस में बोल गया। "नहीं, करनी नहीं है। मेरी शादी करीब-करीब फाइनल हो गई है। सॉफ्टवेयर इंजीनियर हैं, बैंगलोर में। यहीं स्वरूप नगर में मकान है उनका और अब तो सगाई की डेट फाइनल होने वाली है।" लड़की ने सारी संभावनाओं पर पूर्ण विराम लगाते हुए कहा।

सॉफ्टवेयर इंजीनियर यानी लाखों में कमाई और मैं एक अदना-सा कलम घसीटने वाला लेखक, जिसके नाम के साथ बदनामी ज्यादा जुड़ी है। उसका बड़ा घर और मेरा खानाबदोश-सा जीवन। उसका बेहतर और चमकदार भविष्य और मैंने तो आज तक आने वाले कल के बारे में सोचा तक नहीं। लड़का खुद-ब-खुद उस सॉफ्टवेयर इंजीनियर से अपनी तुलना करने लगा। लड़की भी चुप थी। उनके बीच का मौन अतीत बोल रहा था। उन्हें याद आ रहा था- एक व्हाट्सएप ग्रुप में पहली बार बात होना, हर इतवार साथ में अनाथ बच्चों के पास जाना, लड़के की किसी लड़की से दस साल पुरानी मोहब्बत का अंत होना और उस दौरान लड़की का उसे एक अच्छी दोस्त की तरह संभालना। कितना कुछ था, जो सिर्फ "प्रेम" शब्द में परिभाषित नहीं हो सकता था।

"ठीक है पर अगर तुम मुझसे शादी करती हो, तो तुम्हें अपना शहर भी नहीं छोड़ना होगा और मैं तुम्हें खुश रखूंगा।" लड़के ने अंतिम बात कहकर आंखों पर चश्मा लगाते हुए वेटर को बिल लाने का इशारा किया।

लड़की जानती थी, एक तरफ बैंगलोर वाला अनजान लड़का है और दूसरी तरफ उसका थोड़ा-सा अजीब दोस्त। एक तरफ सब सेट और एक तरफ सिर्फ संघर्ष, लेकिन वह जानती थी कि उसका दोस्त अब उसकी उम्र भर के लिए जरूरत है। "सगाई की डेट अभी फाइनल नहीं हुई है, शायद अब हो भी न।" लड़की ने हल्की-सी मुस्कान के साथ कहा। "मतलब क्या?" अब हैरानी की बारी लड़के की थी। "मतलब लस्सी पिलाकर प्रपोज करने का तरीका एकदम घटिया था लेखक महोदय, पर फिर भी मैं इसे मना नहीं कर रही हूं। बाकी घर जाकर बताती हूं।"

आज वह लड़का और लड़की इस शहर में "मृदुल-प्रिया" के नाम से जाने जाते हैं। लोग उन्हें प्रेम नहीं, दो अस्तित्वों की पूर्णता कहते हैं।

-मृदुल और प्रिया